BA-I Page-1

Paper - II

Unite - 4

Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G.P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com

Topic ⇒ Spinoza: Attributes
(स्पिनोजा : गुणों का स्वरूप)

स्पिनोजा के अनुसार गुण वह धर्म है जिसको बुद्धि द्रव्य का स्वरूप समझती है। इस प्रकार से बुद्धि जिसे द्रव्य का स्वरूप समझती है वहीं गुण या धर्म है। गुणों के कारण ही निर्गुण ईश्वर सगुण हो जाता है। यदि गुण नहीं हो तो द्रव्य का स्वरूप बुद्धि के द्वारा विवेचित नहीं किया जा सकता है। अतः द्रव्य के ज्ञान के लिए गुणों की नितान्त आवश्यकता है।

द्रव्य के सार्वभौम निरपेक्ष असीमित होने के कारण द्रव्य के गुण भी असीमित है। इस प्रकार से द्रव्य अनन्तधर्मात्मक है, ईश्वर (द्रव्य) के गुण अनन्त है, परन्तु मानव केवल दो गुणों को जानता है। ये दो गुण है- चैतन्य और विस्तार। चैतन्य चित्त का गुण है और विस्तार अचित्त का गुण है। ये दोनों विरोधी प्रतीत होते हैं, परन्तु एक ही द्रव्य ईश्वर के गुण होने के कारण विरोधी नहीं, बल्कि आपस में भिन्न हैं। देकार्त ने चित्त-अचित्त को स्वतंत्र एवं विरोधी तत्त्व माना है, इसी कारण देकार्त के दर्शन को द्वैतवाद कहा जाता है। स्पिनोजा चित्त और अचित्त दोनों को भिन्न मानते हैं परन्तु विरोधी नहीं। दोनों एक ही द्रव्य के दो स्वरूप है। चित्त आध्यात्मिक स्वरूप है तथा अचित्त

भौतिक स्वरूप है। इन दोनों धर्मों का धर्मी एक ईश्वर होने के कारण यह स्पिनोजा का चित्अचित् समानान्तरवाद (Parallelism) सिद्धान्त कहलाता है।

स्पिनोजा का गुण सिद्धान्त विवाद का विषय रहा है। इस सिद्धान्त को लेकर दो तरह की व्याख्याएँ परवर्ती दार्शनिकों ने की है। (i) प्रत्ययवादी विचारधारा (ii) वस्तुवादी विचारधारा

(i) प्रत्ययवादी विचारधारा :- इस विचारधारा के अनुसार गुण वास्तव में ईश्वर में नहीं रहता है। मानव बुद्धि इन गुणों को ईश्वर में आरोपित करता है। इस प्रकार ये गुण वास्तविक नहीं काल्पनिक होता है। ये गुण की परिभाषा में 'बुद्धि समझती है' इस उक्ति पर विशेष बल देती है। बुद्धि के द्वारा यह समझ लिया जाता है कि गुण ईश्वर में है, परन्तु वास्तव में गुण ईश्वर में नहीं रहता है। हेगेल के अनुसार निर्गुण ब्रह्म में किसी प्रकार के गुणों का आरोपण नहीं किया जा सकता है। यह आत्मव्याघाती अवधारणा है। अतः गुण, द्रव्य का धर्म नहीं बल्कि मानव बुद्धि के द्वारा कल्पित है। इस विचारधारा के समर्थक दार्शनिक हेगेल, ईमन एवं जान केयर्ड थे।

(ii) वस्तुवादी विचारधारा :- इस विचारधारा के समर्थक दार्शनिक फुलो, फिशर आदि है। इनके अनुसार गुण द्रव्य का वास्तविक धर्म है। ये लोग ईश्वर को अनन्त गुणों का धाम मानते है। इन्हीं ईश्वर चित और अचित सभी तत्वों का कारण है। चित और अचित के गुण क्रमशः चेतना और विस्तार को स्वीकार नहीं किया जायेगा तो ईश्वर की अनन्तता खण्डित होगी। दूसरी तरफ

Scanned with CamScanner

स्पिनोजा का समानान्तरवाद गुणों की वास्तविक सत्ता पर ही निर्भर है। यदि गुण वास्तविक नहीं तो उसका समानान्तर भी नहीं होगा। स्पिनोजा ने कहा है कि- "प्रत्येक गुण निषेधात्मक होता है"। इसका अर्थ यह नहीं है कि द्रव्य में गुण नहीं है कि द्रव्य में गुण नहीं होता है, परन्तु इसका अर्थ यह है कि द्रव्य में अनंत गुण होता है। किसी एक द्रव्य में कुछ गुणों का मानव द्वारा अध्यारोपण करने पर उसके अनंत गुणों का निषेध हो जाता है। इस प्रकार से ईश्वर को निर्गुण कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर अनंत है। इसे गुणों द्वारा सीमित नहीं किया जा सकता है। अतः गुण द्रव्य का वास्तविक धर्म है।

स्पिनोजा के दर्शन की गुण संबंधित दोनों व्याख्याएँ एकांगी एवं पूर्वाग्रहों से ग्रसित है। स्पिनोजा न तो प्रत्ययवादी है और न ही वस्तुवादी है। यह अपने दर्शन में दोनों का समन्वय किये हैं। स्पिनोजा ने कहा है- "गुण वह धर्म है जिसे बुद्धि द्रव्य का सार-तत्व समझती है"। इस परिभाषा के पहले पद "गुण वे धर्म है" पर बल दिया जाय तो गुण द्रव्य के वास्तविक स्वरूप प्रतीत होता है। इस परिभाषा के दूसरे पद जिसको बुद्धि द्रव्य का सारतत्व समझती है, पर बल दिया जाय तो प्रतीत होता है गुण बुद्धिगत विचार है। इस प्रकार स्पिनोजा के दर्शन में प्रत्ययवाद एवं बुद्धिवाद दोनों का समन्वय किया गया है। स्पिनोजा का द्रव्य निर्गुण और निराकार ईश्वर है जिस प्रकार से वेदान्त में ब्रह्म की व्याख्या की गयी है।

Scanned with CamScanner

स्पिनोजा द्रव्य और गुण के स्वरूप पर वेदान्त दर्शन के समान दो दृष्टियों से विचार किया है—(i) नित्य दृष्टि या पारमार्थिक दृष्टि (ii) व्यावहारिक दृष्टि या अनित्य दृष्टि
पारमार्थिक दृष्टि से ईश्वर पूर्ण, अनन्त एवं निर्विशेष है। इसे सीमित मानव बुद्धि द्वारा विवेचित नहीं किया जा सकता है। (ii) अनित्य दृष्टि से यह सृष्टि वास्तविक है। गुणों की अभिव्यक्ति द्रव्य की सक्रियता का परिणाम है। अतः द्रव्य नित्य तथा अपरिणामी है। जिस प्रकार से वेदान्त में माया को ब्रह्म की उपाधि स्वीकार किया गया है, उसी प्रकार से स्पिनोजा का गुण उसके निर्गुण ईश्वर के उपाधि प्रतीत होता है। स्पिनोजा का गुण भी माया के समान है। इसी से समस्त प्रपंच्चात्मक जगत की सृष्टि होती है।

स्पिनोजा के गुणों के स्वरूप की उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि गुणों के कारण ही निर्गुण (ईश्वर) हम सबों के लिए सगुण होता है। स्पिनोजा वेदान्त दर्शन की तरह द्रव्य को निर्गुण माना है। अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म की उपाधी माया है, उसी प्रकार से स्पिनोजा का गुण भी माया रूप उपाधि के समान है। स्पिनोजा अपने गुण विचार में प्रत्ययवाद एवं वस्तुवाद का समन्वय करने का प्रयास करते हैं, यहाँ भी दोष दृष्टिगत है। एक ओर वह ईश्वर को निर्गुण एवं निर्विशेष मानते हैं वहीं दूसरी ओर सृष्टि को वास्तविक मानते हैं। यहाँ निर्गुण ईश्वर से वास्तविक सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ इसकी स्पष्ट व्याख्या नहीं कर पाते हैं। वह ईश्वर में मानव बुद्धि के द्वारा कल्पित गुणों का निषेध कर एक सार्वभौम धर्म (Universal Religion) की आधारशिला रखता है। स्पिनोजा के परवर्ती दार्शनिक हेगेल, ब्रूनो, फिख्टे आदि इसके गुण विचार को अपने-अपने ढंग से व्याख्या किया है। अतएव इसकी सार्थकता सिद्ध है।